कोतवाल की पत्नी

एक नगर में दो भाई रहते थे। एक बहुत अमीर था और दूसरा बहुत गरीब था। अमीर के कोई औलाद न थी और गरीब की एक लड़की थी जो बहुत चतुर थी। जब वह लड़की बारह वर्ष की हुई तो उसका पिता उसे अपने अमीर भाई के पास ले गया और कोई काम मांगा। अमीर भाई ने उस लड़की को अपने घर में दासी की जगह दी और वचन दिया कि यदि उसने चार वर्षों तक ठीक काम किया तो वह उसे एक दुधारू गाय देगा। लड़की ने मन लगाकर बड़ी मेहनत से घर का काम किया और चार वर्ष के बाद अपने बीमार पिता की सेवा के लिए घर लौटना चाहा। वचन के अनुसार उसने अपनी सेवा के बदले अपने चाचा से एक गाय मांगी। चाचा लालची था और उसकी नीयत गाय देने की न थी। वह बोला, "गाय तो बहुत रुपयों की आती है। तुम गाय के बदले कुछ रुपये क्यों नहीं ले लेतीं।" लड़की बहुत स्वाभिमानी थी और चाचा की नीयत को भांप रही थी, सो दुखी होकर बिना कुछ लिए अपने घर लौट गई। उसने अपने पिता को सारी

बात बतायी और शहर के कोतवाल से इसकी शिकायत करने को कहा।

पिता कोतवाल के पास पहुंचा। कोतवाल भ्रष्ट था और धनी व्यक्तियों के विरुद्ध कुछ भी करने से डरता था। उसने एक तरकीब सोची। दोनों भाइयों को बुलाकर वह बोला, "मैं तीन सवाल पूछता हूं। तुम दोनों में से जो भी कल तक ठीक उत्तर देगा फैसला उसी के हक में दिया जाएगा।" उसने पूछा, "दुनिया में सबसे तेज क्या है? दुनिया में सबसे मीठा क्या है? दुनिया में सबसे धनी कौन है?" अमीर ने घर जाकर अपनी पत्नी से सब बात कही। वह बोली, "ये भी काई सवाल हैं? अभी हल किये देती हूं। सबसे तेज हमारा काला घोड़ा है जो हवा की गति से भागता है। सबसे मीठा हमारे बाग की मधुमक्खियों का बनाया शहद है और सबसे ज्यादा धन हमारी तिजोरी में है।" उधर निर्धन ने घर जाकर अपनी बेटी को सब हाल कहा। उसने अपने पिता से कहा कि वे आराम करें और वह सुबह तक सोचकर उत्तर बता देगी। रात भर सोचकर अगले दिन सुबह वह बोली, "सबसे तेज हैं आंखें। सबसे मीठे हैं स्वप्न और सबसे धनी है किला जिसमें राजकोष सुरक्षित है।"

अगले दिन दोनों भाई अपने उत्तरों के साथ कोतवाल के सामने गए। निर्धन के उत्तर से कोतवाल बहुत खुश हुआ और पूछा कि ऐसे उत्तर उसे कहां से मिले। निर्धन के बताने पर कोतवाल ने उसकी लड़की से मिलने की इच्छा प्रकट की। साथ ही यह शर्त भी रखी कि गाय तभी दिलायेगा जब वह लड़की उससे मिलने न रात में आए, न दिन में और अपने साथ कोई वस्तु लाए जो उपहार हो भी, नहीं भी हो। निर्धन समझ गया कि कोतवाल सही न्याय नहीं करना चाहता है, किन्तु उसकी लड़की ने जो कि बहुत चतुर थी, हार नहीं मानी। वह लड़की ब्रह्म मुहूर्त में चिड़ियों से भरा एक डिब्बा लेकर कोतवाल से मिलने गई। उस समय न दिन था न रात। डिब्बा खोलते ही सब चिड़ियां उड़ गईं। इस तरह वह उपहार था भी और नहीं भी था। लड़की की अक्लमंदी से कोतवाल बहुत खुश हुआ। उसने लड़की के सामने शादी का प्रस्ताव रखा और दोनों की शादी हो गयी। कोतवाल ने अपनी पत्नी से वादा लिया कि वह उसके न्याय में कभी दखल नहीं देगी।

लड़की का स्वभाव मधुर होने के कारण वह आस-पड़ोस में बहुत लोकप्रिय हो गई। इसी तरह कई वर्ष बीत गए। एक दिन कोतवाल के पास दो किसान न्याय के लिए पहुंचे। उनमें से एक के पास एक घोड़ा था और दूसरे के पास एक घोड़ी थी जिन्होंने एक नन्हे बच्चे को जन्म दिया था। दोनों किसान घोड़े के नन्हे बच्चे पर अपना अधिकार जता रहे थे। घोड़े वाला किसान धनी था इसलिए कोतवाल ने उसके पक्ष में फैसला दिया। घोड़ी वाला गरीब किसान रोता हुआ कोतवाल के घर पहुंचा और उसकी पत्नी को सारी बात बतायी।

सब सुनकर उसने गरीब को एक उपाय बताया। अगले दिन कोतवाल एक पहाड़ी का दौरा करने

गया। वहां उसने देखा कि वही गरीब किसान मछली पकड़ने बैठा है। कोतवाल बोला, "अरे मूर्ख, पहाड़ पर मछली कहां से आएगी?" गरीब बोला, "हुजूर यदि घोड़ा बच्चा दे सकता है तो पहाड़ पर मछली भी फंस सकती है।" कोतवाल बहुत लज्जित हुआ और बोला, "यदि तुम बता दो कि यह सलाह तुम्हें किसने दी तो मैं तुम्हें घोड़े का बच्चा दिला सकता हूं।" लोभ में आकर किसान ने कोतवाल की पत्नी का नाम ले दिया। कोतवाल घर जाकर पत्नी पर बहुत नाराज हुआ कि उसने अपना वादा क्यों तोड़ा। वह बोली कि अन्याय उससे सहन नहीं होता। तब उसके पति ने उसे सजा के तौर पर घर से निकल जाने को कहा और बोला, "तुमने मेरी बहुत प्रेमपूर्वक सेवा की है। अपनी पसंद की कोई सबसे प्रिय चीज तुम अपने साथ ले जा सकती हो।" पत्नी कुछ सोचकर बोली, "क्यों न हम आज रात का खाना आखिरी बार साथ-साथ खायें।" कोतवाल ने बात मान ली। पत्नी ने उस दिन बहुत स्वादिष्ट भोजन बनाया और खाने के समय अपने पति को धीरे-धीरे खूब शराब पिला दी। जब वह बेहोश हो गया तो वह अपने नौकरों की मदद से कोतवाल को उठाकर अपने पिता के घर ले गयी।

अगले दिन जब कोतवाल सोकर उठा तो उसने स्वयं को निर्धन किसान की झोंपड़ी में पाया। पत्नी बोली, "आपके आदेश के अनुसार मैं आपके घर से अपनी सबसे प्रिय वस्तु अर्थात् आपको ही लेकर अपने पिता के घर चली आई हूं।" कोतवाल अपनी अपनी पत्नी की बुद्धि और अपने प्रति अगाढ़ प्रेम देखकर रीझ गया और उसे सम्मानपूर्वक अपने घर वापस ले गया।

उस दिन से कोतवाल साहिब फैसले सुनाने से पहले चुपके से अपनी पत्नी की सलाह भी लेते थे। □

साभार (चेक देश की लोककथाएं)

कब तक बांधे रखोगे हमको
फर्ज़ - प्यार की तक़रीर से
कभी न कभी जाएंगे उस पार
तुम्हारी बनाई दहलीज़ से।